1. (A)

इंडियन एसोसिएशन – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्ववर्ती संस्थाओं में से एक महत्वपूर्ण संस्था थी। इसकी स्थापना 1876 ई. में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनंदमोहन बोस के नेतृत्व में की गई कालांतर में इसका विलय 1886 में राष्ट्रीय कांग्रेस में कर दिया गया।

1 (B)

चार्ल्स मैटकॉफ – इन्हें "भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता" कहा जाता है क्योंकि मैटकॉफ ने 1835 में पारित 'प्रेस एक्ट' के प्रतिबंधों को हटा लिया था।

1 (E)

एनफील्ड रायफल –

एक नये प्रकार की बंदूक जिसमें गाय और सुअर के चर्बी युक्त कारतूसों का प्रयोग जाता है। 1856 में अंग्रेजों द्वारा पुरानी बंदूक के स्थान पर इसका प्रयोग करने का निर्णय लिया गया जिससे भारतीय हिंदुओं व मुसलमानों दोनों सैनिकों की धार्मिक भावना को चोट पहुँची और यह 1857 की क्रांति का प्रमुख कारण बनी।

1(F)

मलिक काफूर –

अलाउद्दीन खिलजी का कृपापात्र। इसने अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसके नाबालिक बेटे को गद्दी पर बैठाया।

Scanned with CamScanner

1(H) घाघरा का युद्ध - मई 1529 में अफगानों एवं बाबर की सेना के बीच लड़ा गया जिसमें बाबर विजयी हुआ।

1(I) तालीकोटा का युद्ध - विजयनगर साम्राज्य और इसके दक्षिण के ~~भारतीय~~ राज्यों के संघ के बीच 1565 ई. मे लड़ा गया। इसमे विजयनगर का नेतृत्व रामराय ने किया। युद्ध मे विजयनगर की हार हुई। इसे बन्नीहट्टी की लड़ाई भी कहते है।

1(J) जैनुल-आबिदीन - कश्मीर का महान मुस्लिम शासक, विद्वान, संगीत प्रेमी, महान निर्माता, सहिष्णु शासक। पंद्रहवीं सदी में इसके अधीन कश्मीर का आर्थिक व सामाजिक, सांस्कृतिक विकास हुआ। हिंदुओं के प्रति अत्यधिक उदारता दिखाई।

1(K) आल्हा-ऊदल - आल्हा और ऊदल, बुंदेलखंड की महोबा रियासत के चंदेल शासक परमार्दिदेव के वीर सेनापति थे। परमार्दिदेव के ~~दरबा~~ दरबारी कवि ~~चन्द~~ जयदेव ने आल्हखण्ड नामक काव्य में इनके शौर्य का वर्णन किया है।

1(M) सूर्यसेन - महान क्रांतिकारी, असहयोग आंदोलन मे योगदान, चटगाँव शस्त्रागार लूट (अप्रैल 1930) को अंजाम दिया। मास्टर दा के नाम से लोकप्रिय

2(B)

8 अगस्त 1942 को बंबई के ग्वालिया टैंक मे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक मे भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया जिसमे गांधी जी को संघर्ष का नेता घोषित किया गया। भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने का संकल्प पारित हुआ। यह इस आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। इस आंदोलन में जनसामान्य की भागीदारी अद्भुत थी जनता के प्रत्येक वर्ग, किसान, महिलाएं, युवक, सरकारी अधिकारी, मुस्लिम आदि ने अपना योगदान दिया। सरकारी दमन, प्रमुख नेतृत्वों की गिरफ्तारी के बावजूद भी जनमानस ने राष्ट्रीयता एवं साहस का परिचय दिया। भारत को तत्काल प्रभाव से ब्रिटिश शासन से मुक्ति का आह्वान इस आंदोलन के महत्व को दर्शाता है।

2(C)

1857 की क्रांति के सैनिक कारण —

1856 में अंग्रेजों द्वारा पुराने हथियारों के स्थान पर नई एनफील्ड रायफल के प्रयोग का निर्णय लिया गया। इन नये प्रकार के रायफल में गाय व सुअर की चर्बी से युक्त कारतूसो का प्रयोग होता था जिसे सैनिकों द्वारा मुँह से तोड़कर रायफल में भरना होता था। यह खबर जब भारतीय सैनिकों को पता लगी तो उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची जिसके फलस्वरूप एक सैनिक मंगल पांडे ने 29 march 1857 को इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। 8 April 1857 को विद्रोह के जुर्म में मंगल पांडे को फाँसी दे दी गई जिससे पूरे देश में अशांति का माहौल हो गया।

Scanned with CamScanner

ऐसी स्थिति में अंग्रेजों से बदला लेने के लिये मेरठ से 10 may 1857 को सैनिकों ने पुनः विद्रोह कर दिया।

---

2 (D)

चंद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियाँ

① मौर्य साम्राज्य की स्थापना।

② पश्चिमोत्तर भारत को सेल्युकस की गुलामी से मुक्त कराया।

③ चंद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। केवल तमिलनाडु व पूर्वोत्तर भारत को छोड़कर प्राचीन भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य चंद्रगुप्त मौर्य ने स्थापित किया

④ चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल की जानकारी केवल 2 स्रोतों पर आधारित है।
- → मेगस्थनीज की इण्डिका
- → कौटिल्य का अर्थशास्त्र

⑤ स्रोतों से ज्ञात होता है कि प्रशासन बहुत ही व्यापक था जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप पर नियंत्रण स्थापित था।

⑥ चंद्रगुप्त के प्रशासन की सबसे बड़ी विशेषता थी विशाल सेना। इस विशाल सेना के रखरखाव हेतु सबसे महत्वपूर्ण कर व्यवस्था अत्यधिक सुगठित थी।

Scanned with CamScanner

2 (F)

मध्यप्रदेश में मालवा क्षेत्र ताम्रपाषाणिक संस्कृति की धरोहर से समृद्ध क्षेत्र माना जाता है। यहाँ पर चम्बल, बेतवा व नर्मदा नदी के किनारे कई ताम्रपाषाणिक स्थल पाये गये हैं।

① नर्मदा नदी के तट पर — नवदाटोली (प. निमाड़) और महेश्वर

② चम्बल नदी के तट पर — कायथा तथा डंगवाला नागदा, आवरा, अहार, अहार (मंदसौर)

③ बेतवा के पास — पिपल्या लोरका (रायसेन), ऐरण (सागर), विदिशा में बेसनगर।

2 (H)

चरण पादुका नरसंहार —

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बुंदेलखंड में भूराजस्व व कर अदायगी के विरोध में एक आंदोलन चलाया जा रहा था। छतरपुर रियासत के राजा व नौगांव के गवर्नर ने राजस्व व कर को समाप्त करने से इंकार कर दिया। पालीटिकल एजेंट फिशर ने क्षेत्र मे आतंक फैला दिया। इसी बीच करो के विरुद्ध चलाये जा रहे आंदोलन के लिये चरणपादुका नामक स्थान पर 14 जनवरी 1931 को संक्राति के दिन लोगो की आम सभा बुलाई गई। इसके विरोध में राजा ने अंग्रेजों से मदद मांगी और सेना ने बिना किसी पूर्व सूचना के निहत्थी जनता पर गोलियाँ बरसाना शुरु कर दिया

Scanned with CamScanner

इस घटना मे 20 लोग मारे गये व 26 लोग घायल हुये शहीद लोगो मे रामलाला, छक्के कुर्मी चिरकू कुर्मी, धरमदास, सेठ सुंदरलाल बरोह आदि थे। सभा के अध्यक्ष - सरजू दौआ को 4 साल की जेल की सजा दी गई।

जलियाँवाला हत्याकांड की तरह बर्बर एवं क्रूरता भरे इस कृत्य से सारा बुंदेलखण्ड स्तब्ध हो गया। इस नरसंहार को चरण पादुका नरसंहार के नाम से जाना गया।

---

2 (J)

1539 ई. मे चौसा का युद्ध एवं 1540ई. मे कन्नौज का युद्ध; इन दोनो की युद्धो मे शेर खाँ के हाथो हुमायूँ को पराजय का मुख देखना पड़ा जिसके निम्नलिखित कारण है -

1. अफगानो की शक्ति का सही अंदाजा नहीं लगा पाना।
2. शेर खाँ के शांति प्रस्ताव को मानकर दोषपूर्ण सेनापतित्व का परिचय दिया।
3. भाइयो के प्रति संदेह व अविश्वास की भावना।
4. हुमायूँ, बाबर के समान पराक्रमी नहीं था।
5. स्थानीय शासको और जमींदारो को अपने पक्ष मे साथ लेकर न चलना।

Scanned with CamScanner

2. (K)

दक्कन में मौर्यों के उत्तराधिकारी सातवाहनों का सबसे प्रतापी राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी था। गौतमीपुत्र ने 106 ई. से लेकर 130 ई. तक शासन किया। अपने शासनकाल के दौरान उसने शकों द्वारा विजित सातवाहन क्षेत्र, जो भारत के पश्चिम में व महाराष्ट्र में पड़ता था, को वापस जीता। शकों पर विजय प्राप्त की। गौतमीपुत्र ने अनेक क्षत्रियों का नाश किया तथा क्षहरात वंश के शत्रु शासक नहपान समेत सम्पूर्ण वंश का नाश किया। उसने मालवा से लेकर कर्नाटक तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। गौतमीपुत्र अपने को एकमात्र ब्राह्मण कहता था इसके लिये चातुर्वर्ण्य की पुनः स्थापना कर वर्णसंकर को रोका। ब्राह्मण होते हुये भी बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया। ब्राह्मणों को जागीर देने की प्रथा सातवाहन काल में ही प्रारंभ हुई।

---

2 (L)

फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों ने बौद्धिक स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिनमें वाल्टेयर, रुसो एवं मांटेस्क्यू जैसे दार्शनिकों ने समाज एवं राजनीति के प्रति लोगों में वैज्ञानिक विश्लेषण का नयी सोच विकसित करने में पृष्ठभूमि तैयार की।

वाल्टेयर तत्कालीन राजतंत्र एवं पादरी वर्ग में व्याप्त भ्रष्ट एवं अनैतिक मनोवृत्ति का घोर आलोचक था उसने इस व्यवस्था की खुलकर निंदा की तथा इसमें परिवर्तन की वकालत की।

रुसो का योगदान अत्यंत सराहनीय है। स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व जो फ्रांसीसी क्रांति के मूल अंग थे रुसो के विचारों से ही उद्धृत थे। रुसो के अनुसार राज्य की संप्रभुता जनता में अंतर्निहित है, राज्य का कानून जनता की इच्छाओं

Scanned with CamScanner

पर आधारित होना चाहिए न कि राज्य की। अपनी पुस्तक सोशल कॉंट्रेक्ट में बताया कि राज्य का जन्म एक समझौतावादी सिद्धांत पर आधारित है जनता जब भी चाहे राज्य के शासक को हटा सकती है।

इसी प्रकार मांटेस्क्यू द्वारा फ्रांस की क्रांति में वैचारिक चेतना लाने का प्रयास किया गया मांटेस्क्यू की विशेषता यह थी कि वह न तो राज्य की आलोचना किया, न ही राज्य के विरुद्ध कोई आंदोलन अपितु एक आदर्शवादी व्यवस्था का उदाहरण पेश करते हुए "शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत" को स्पष्ट किया। और इसी के द्वारा फ्रांसीसी प्रशासन की कमियों को उजागर किया।

दार्शनिकों की भूमिका को फ्रांसीसी क्रांति में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता क्यों कि इन्होंने ही तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक दुर्दशा, सामाजिक विषमता एवं धार्मिक रूढ़िवादिता को जनता के समक्ष प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत किया। अतः दार्शनिकों के इन विचारों ने क्रांति के दौरान उत्प्रेरक का कार्य किया। दार्शनिकों के इसी योगदान को स्वीकार करते हुए नेपोलियन ने कहा है कि -

"यदि रूसो न होता तो क्रांति भी नहीं होती"

Scanned with CamScanner

3 (A)

प्रथम विश्व युद्ध विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी यह विश्व युद्ध 28 जुलाई 1914 से आरंभ होकर 11 नवंबर 1918 तक चला। इस युद्ध की पृष्ठभूमि मे अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति, शस्त्रो की होड़, उग्रराष्ट्रवाद, साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा जैसे कई कारण थे

① आर्थिक कारण

- ① साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा – यूरोप के देशो के बीच साम्राज्य विस्तार को संघर्ष व तनाव बढ़ा
- ② बाजार के लिये संघर्ष – सभी औद्योगिकीकृत देश अपने लिए बाजार की तलाश कर रहे थे।
- ③ व्यापारिक प्रतिबंध – एक देश दूसरे देश से आयात को कम करने की कोशिश कर रहे थे निर्यात को प्रोत्साहन दे रहे थे जिससे तनाव बढ़ा

② राजनैतिक कारण

- ① इटली व जर्मनी के एकीकरण से विश्व शक्ति (ब्रिटेन व फ्रांस) को चुनौती मिली
- ② अल्पसंख्यको की समस्या – पूर्वी यूरोप मे अल्पसंख्यकों का अपने मूल देस के प्रति लगाव था
- ③ बोस्निया की समस्या राष्ट्रवाद से जुड़ी थी

Scanned with CamScanner

- ④ सैन्यवाद को गुप्त संधियों के माध्यम से बढ़ावा मिला।

③ सामाजिक-सांस्कृतिक कारण –

- ① उग्र राष्ट्रीयता का विकास –
  फ्रांसीसी क्रांति व इटली-जर्मनी के एकीकरण के बाद ही राष्ट्रवाद की विचारधारा चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई जिससे विभिन्न मुद्दों में टकराव की स्थिति पैदा हुई
- ② भाषा-धर्म और संस्कृति का विवाद –
  मुख्य रूप से यह समस्या अल्पसंख्यकों से जुड़ी हुई थी।

④ सैन्य कारण –

- सर्बिया को रूस का समर्थन
- ऑस्ट्रिया को जर्मनी का समर्थन

⑤ अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव

⑥ तात्कालिक कारण – सराजेवो में ऑस्ट्रियाई राजकुमार फर्डिनेंड की हत्या।

Scanned with CamScanner

3. (B)

सिंधु घाटी सभ्यता, एक कांस्ययुगीन सभ्यता थी यह अपनी समकालीन सभ्यताओं मिस्र की सभ्यता एवं मेसोपोटामिया की कई सभ्यताओं से कई मायनों में बेहतर एवं विकसित थी। सिंधु घाटी सभ्यता का काल 2500 BC से 1900 BC तक माना जाता है। यह 600 वर्षों तक निरंतरता के साथ कायम रही। मेसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यतायें तो 1900 ई.पूर्व के बाद भी टिकी रहीं परंतु हड़प्पा की नगरीयसंस्कृति उसी समय लुप्त हो गई। इसके बहुत से कारण बताये जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

① 2000 ई.पू के आसपास सिंध क्षेत्र में वर्षा की मात्रा बढ़ गई जिससे बाढ़ आने के कारण खेती व पशुपालन पर बुरा असर पड़ा।

② रेगिस्तान के फैलने से मिट्टी की लवणता में वृद्धि हो गई और उर्वरता घटती गई।

③ भूकम्प आने के कारण जमीन धँस गई या सिंधु नदी की धारा बदलने से सिंधु क्षेत्र वीरान हो गया

④ आर्यों के आक्रमण ने सिंधु सभ्यता को नष्ट कर दिया।

इस प्रकार एक उन्नत नगरीय सभ्यता का किस प्रकार पतन हुआ इसकी स्पष्ट जानकारी का प्रमाण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। फिर भी एक विकसित सभ्यता होने के कारण सिंधु घाटी सभ्यता आज की नगरों के आयोजन के लिये आदर्श रूप प्रस्तुत करती है।

Scanned with CamScanner

3 (c)

सर्वप्रथम औद्योगिक क्रांति इंग्लैण्ड में ही ~~प्रारम्भ~~ प्रारंभ हुई इसके पीछे इंग्लैण्ड को विशिष्ट स्थिति प्रदान करने वाले कई भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं वैज्ञानिक कारण हैं जो निम्नलिखित है।

① भौगोलिक कारण - इंग्लैण्ड एक द्वीपीय देश है,

इस कारण समुद्र के रास्ते परिवहन आसान हुआ, बंदरगाहों का विकास, व्यापारिक आवागमन में सुविधा के साथ ही यूरोप में होने वाली गतिविधियों से प्रभावित नहीं हुआ।

कोयला एवं लोहे के प्रचुर भंडार होने साथ ही ~~इसके~~ वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप इनके उत्पादन में वृद्धि संभव हो सकी।

② आर्थिक कारण -

जनसंख्या के मामले में इंग्लैण्ड काफी समृद्ध था जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता महसूस हुई।

इसीलिए कृषि क्रांति को सरकार ने शुरू किया और बड़े-बड़े फार्मों की स्थापना की जिससे छोटे किसान अपनी जमीन से उजड़ गये और शहरों की ओर प्रवास कर कारखानों ~~हेतु~~ में श्रमिक के रुप में कार्य किया अर्थात सस्ता श्रम ~~कारखानों~~ ~~जिससे~~ से उत्पादन की लागत गिर गई जिससे उद्योग लगाना आसान हो गया।

③ राजनैतिक कारण -

इंग्लैण्ड में 1688 ई. की रक्तहीन क्रांति के पश्चात सुव्यवस्थित राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हो चुकी थी। अतः राजनीतिक स्थिरता औद्योगिक विकास में सहायक सिद्ध हुई।

इसके अलावा इंग्लैण्ड में लोकतांत्रिक सरकार स्थापित थी जो जनता की उन्नति व विकास के लिए प्रयत्नशील थी।

Scanned with CamScanner

④ पूँजी की उपलब्धता - औद्योगिक निवेश हेतु पूंजी की अधिकाधिक मात्रा दास व्यापार, औपनिवेशिक लूट, आदि से लाये गये धन से एकत्र की जाती थी।

⑤ उपनिवेशवाद - इंग्लैण्ड का शासन इतना विस्तृत था कि कभी भी सूरज डूबता नहीं था अतः अपने उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति उपनिवेशों से तथा इन्हीं उपनिवेशों को बाजार बनाया गया। फलस्वरूप औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिला।

⑥ मजबूत सामुद्रिक शक्ति - अन्य देशों की तुलना में इंग्लैण्ड अपनी सुदृढ़ एवं प्रभावी जलसेना के आधार पर व्यापार को बढ़ाने में सफल रहा।

Scanned with CamScanner